Gyanvividha, Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-403-408

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.- 403-408
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com
Author's :
डॉ. सत्यवती चौबे
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, विल्सन कॉलेज, मुंबई.

नैसर्गिक ग्रामीण परिवेश एवं लौहपुरुष सरदार पटेल

आभार (Acknowledgement) : यह आलेख भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR) के मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट के अंतर्गत लिखा गया है। इस शोध कार्य के लिए ICSSR के प्रति हम कोटिशः आभार व्यक्त करते हैं, जिनके आर्थिक एवं अकादमिक सहयोग से हमें सरदार वल्लभभाई पटेल की जीवन-दृष्टि, विचारधारा, ग्रामीण परिवेश (वातावरण) के प्रति सरोकार एवं राष्ट्रनिर्माण में उनके योगदान के प्रति गंभीर अध्ययन एवं विश्लेषण करने का अवसर प्राप्त हुआ।

हम ICSSR के मार्गदर्शन, विश्वास और सहयोग के लिए विशेष रूप से कृतज्ञ हैं, जिनके समर्थन के बिना यह शोध कार्य संभव नहीं हो पाता। यह आलेख उसी शैक्षिक प्रेरणा और अनुसंधानात्मक प्रतिबद्धता का परिणाम है।

शोध सार : सरदार वल्लभभाई पटेल ग्रामीण जीवन को नैसर्गिक सुन्दर एवं आदर्श बनाने के हिमायती थे। वे ग्रामीण परिवेश के वाह्य पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के साथ-साथ देश के ग्रामवासियों के आतंरिक अर्थात् मानसिक पर्यावरण की शुद्धता एवं स्वच्छता चाहते थे। वे आदर्श गाँव की ऐसी कल्पना करते हैं जो प्रदूषणरहित हो, स्वच्छ, सुंदर, आत्मनिर्भर और सुसंगठित हो। उनके अनुसार स्वराज की नींव गाँव में ही रखी जानी चाहिए। वे गाँव को स्वर्ग से भी सुंदर बनाना चाहते थे, जहाँ चारों तरफ हरियाली, साफ-सफाई, स्वास्थ्य और सुव्यवस्था हो। गाँव में गंदगी, खुले में शौच, अशुद्ध जल, पशु-मनुष्य का एक साथ रहना जैसी अव्यवस्थाएँ नहीं होनी चाहिए। किसान प्राकृतिक खाद का सही उपयोग करें, सभी जल स्रोतों को स्वच्छ रखें और घर-आँगन साफ-सुथरे हों।

सरदार पटेल स्त्रियों के सम्मान पर विशेष जोर देते हैं। वे मानते थे कि जब तक किसान अपनी पत्नी और स्त्री जाति को समानता, आदर और प्रेम नहीं देगा, तब तक परिवार, गाँव और देश का विकास

Corresponding Author :
डॉ. सत्यवती चौबे
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, विल्सन कॉलेज, मुंबई.

संभव नहीं है। वे शराब, जुआ, आलस, अज्ञानता और फूट को गाँव और देश के लिए घातक मानते थे।

उनके अनुसार गाँव में एकता और संगठन अत्यंत आवश्यक है। जैसे शरीर के अंग मिलकर काम करते हैं, वैसे ही गाँव के लोगों को एक-दूसरे के दुख-सुख को अपना समझना चाहिए। आपसी ईर्ष्या, द्वेष, जाति-पाति, धर्म और छुआछूत जैसी बुराइयों को समाप्त करना जरूरी है। किसान ही देश की सबसे बड़ी शक्ति हैं, फिर भी वे उपेक्षित हैं; इसलिए उनमें आत्मसम्मान, स्वाभिमान और अपनी शक्ति का बोध जगाना आवश्यक है।

सरदार पटेल चाहते थे कि किसान खेती के साथ-साथ गृह उद्योग अपनाएँ, फिजूलखर्ची और कर्ज से बचें, बाल विवाह न करें और बच्चों, लड़के-लड़कियों, को समान रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य और अच्छे संस्कार दें। उनका विश्वास था कि जब किसान संगठित, शिक्षित, स्वावलंबी और स्वाभिमानी बनेगा, तब गाँव आदर्श बनेंगे और सच्चा स्वराज स्थापित होगा।

बीज शब्द : नैसर्गिक ,सार्वकालिकता, संकल्पना, उत्कृष्ट, समृद्ध, युगद्रष्टाभविष्य ,द्रष्टा, विहंगावलोकन, दुर्बलता, विरुद्ध, दृष्टांत, पश्चात, गुरेज़, नीर-क्षीर-विवेकी, सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय, अत्याधुनिक, दूरदर्शिता, तत्कालीन, सत्याग्रह, स्वराज, समीक्षात्मक, अवलोकन, जीवन दृष्टि।

शोध आलेख : युगद्रष्टा लौहपुरुष सरदार पटेल भारत देश की वाणी थे, भारत माता के सच्चे सपूत थे। उनकी जीवन दृष्टि अखंड भारत की संकल्पना लिए हुए सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय, लोक मंगल की भावना एवं सार्वकालिकता को लेकर चलने वाली थी। इनके द्वारा सम्पूर्ण भारतवर्ष में दिये गये भाषणों पर आधारित 'सरदार पटेल के भाषण', ग्रन्थ वर्ष 1950 में नवजीवन प्रकाशन मंदिर द्वारा प्रकाशित एक अत्यंत समृद्ध कृति है। इस पुस्तक का संपादन श्री नरहरि द्वारकादास पारीख और श्री उत्तमचंद दीपचंद शाह ने गुजराती भाषा में किया था एवं इसका हिंदी अनुवाद श्री राम नारायण चौधरी ने किया है। कुल 624 पृष्ठों के इस पुस्तक में भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल के वर्ष 1918 से लेकर 1947 तक के सभी भाषणों को अत्यंत श्रद्धा, निष्ठा और प्रेम के साथ सँजोया और सहेजा गया है।

'सरदार पटेल के भाषण' नामक ग्रंथ में इनके प्रकाशित ग्रामीण जीवन जीते किसानों के परिवेश से संबंधित भाषणों का विहंगावलोकन करने के पश्चात यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं है कि लौह पुरुष पटेल की जीवन दृष्टि वैज्ञानिक, अति सूक्ष्म, व्यापक, अत्याधुनिक और नीर-क्षीर-विवेकी थी। वे समय की धारा को बखूबी समझते थे। वे अपनी दूरदर्शिता से देश, काल, समाज, परिवेश की तत्कालीन सभी समस्याओं से भली-भांति परिचित थे; इसके साथ-साथ भविष्य में सिर उठाने वाली समस्याओं से भी रग-रग वाकिफ़ थे। वे सच्चे स्वराज की स्थापना करने के लिए भारत देश के गाँवों को साफ़, सुन्दर, स्वच्छ एवं सशक्त बनाना चाहते थे।

'सरदार पटेल के भाषण' (1918 से 1947 तक) नामक ग्रंथ में उनके कुल 158 भाषणों को संकलित किया गया है। ये सभी भाषण बहुविषयी हैं जिनमें खेड़ा सत्याग्रह, प्राकृतिक आपदाओं से संबंधित भाषण, गुजरात बाढ़ दौरा, महामारी, बारडोली सत्याग्रह, खादी, विश्वयुद्ध, विभिन्न प्रांतीय राजनैतिक परिषद, बहिष्कार आंदोलन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, विभिन्न सत्याग्रह, बोरसद सत्याग्रह, विभिन्न प्रांतों के दौरे से संबंधित भाषण, धर्मयुद्ध, स्वाधीनता आंदोलन से संबंधित भाषण, रियासती सम्मेलनों से संबंधित, स्थानीय प्रजा के संबोधन, नाजीवाद और साम्राज्यवाद से संबंधित, विभिन्न स्थानों के महानगरपालिका, स्वराज, चुनाव आदि से संबंधित अनेक-अनेक भाषण संकलित हैं।

इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ में सरदार पटेल के भाषणों में प्राथमिक स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों, शिक्षकों को संबोधित भाषण, शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य व्यवस्था, कृषि व्यवस्था से संबंधित भाषण, किसानों, ग्राम सेवक, आदर्श गाँव की परिकल्पना, गाँव की सुरक्षा, गाँव के संगठन, साफ-सफाई-स्वच्छता से संबंधित भाषण, स्त्रियों-कन्याओं के सर्वांगीण विकास से संबंधित भाषण, हमारे डॉक्टरों, देश के युवाओं को संबोधित करते भाषणों की भरमार है। इन

सभी भाषणों का समीक्षात्मक अवलोकन एक आलेख में संभव नहीं है, इसलिए प्रयास है कि इस आलेख के माध्यम से सरदार पटेल के नैसर्गिक ग्रामीण परिवेश से संबंधित दृष्टिकोण का संज्ञान लिया जाय।

अब प्रश्न उठता है कि तत्कालीन समय में अर्थात पराधीन भारत में ग्रामों एवं ग्रामीणों की स्थिति कैसी थी? ग्रामीण परिवेश का पर्यावरण कैसा था? पटेल किस तरह के आदर्श गाँव की संकल्पना करते हैं? उनकी दृष्टि में आदर्श ग्राम का स्वरुप कैसा होना चाहिए?

इस बाबत उनके भाषणों का अध्ययन करने के पश्चात् इन सभी प्रश्नों का उत्तर यही प्राप्त होता है कि सरदार पटेल ग्रामीण परिवेश के वाह्य पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के साथ-साथ देश के ग्रामवासियों का आतंरिक यानी कि मानसिक पर्यावरण की शुद्धता, स्वच्छता चाहते थे। वे स्वराज के गाँव को स्वर्ग से भी सुंदर बनाना चाहते हैं जहाँ चारों तरफ लहलहाते हरे-भरे खेत-खलिहान हों, मोटे अनाज की खूब खेती हो, सम्पूर्ण ग्रामीण परिवेश में हरीतिमा छायी हो, गाँव के चप्पे-चप्पे पर स्वच्छता हो, खुले में शौच कदापि नहीं हो, गाँव के किसान बड़े-बड़े गड्ढे बनाकर उसमें जानवरों के मलमूत्र को एकत्रित करें, उन गड्ढों पर तख्ते रखकर उस पर पाखाना बना दें, सोने जैसी खाद को कदापि बर्बाद न करें, जैविक खेती करें। गाँव में प्रदूषण या किसी भी तरह की गंदगी का नामोनिशान न हो। घर, आँगन और दरवाजे पर प्रतिदिन पानी का छिड़काव करके सोंधी मिट्टी की महक और पानी के साथ बैठे धूल का स्वास्थ्य पर अच्छा असर हो।

सरदार पटेल को बहुत दुख होता था जब स्त्रियाँ अपने बच्चे को घर-आँगन में ही खुले में शौच करवाती हैं, उस पर मक्खियाँ भिनकती हैं। बच्चे समेत घर के अन्य सदस्य बीमार पड़ते हैं। उनका कहना था कि किसानों की स्त्रियों ने यदि गुलाब देखा होता, तो वे गुलाब की तरह अपने बच्चों को पालतीं, उन्होंने तो बस गोबर थापना सीखा है फिर वे अपने बच्चों की परवरिश भला गुलाब की तरह कैसे कर सकेंगी?

सरदार पटेल देश के ग्रामीणों को बहुत सहज एवं सरल शब्दों में समझाते हैं कि गाँव के जल स्त्रोत नदी, तालाब, कुएँ, नहर आदि के आसपास गंदगी, कीचड़, मक्खियों का भिनभिनाना इनके जल को जहरीला बनाता है। आदर्श गाँव के जल स्त्रोत नदी, तालाब, कुएँ, नहर आदि बिल्कुल स्वच्छ, साफ-सुथरा होना चाहिए। गाँव में कपास है, चरखा है लेकिन फिर भी किसान यदि बाहर से कपड़ा लाता है तो उस पर लानत है। उसे सरदार पटेल किसान मानते ही नहीं हैं। गाँव के घरों-मकानों में देखा गया है कि पालतु पशु और मनुष्य एक साथ रह रहे हैं। इस तरह की व्यवस्था बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। कीड़े-मकोड़े, खटमल और पिस्सुओं के साथ-साथ रहने पर बच्चे भी चिल्लाएँगे और जानवर भी चिल्लाएँगे तो ऐसे में घर की स्त्री की क्या दशा होगी?

सरदार पटेल पुनः कहते हैं कि गाँव का गाँव अंधेरे में डूबा रहता है; गाँव में संगठन करके लालटेनें सार्वजनिक स्थानों पर रखी जाएँ, गाँव के सुखी-संपन्न लोग तेल दें और गाँव के नौजवान या स्त्रियाँ लालटेनें साफ करके नियमित रुप से चलाने की जिम्मेदारी संभालें। सरदार पटेल का मानना था कि मनुष्य की अज्ञानता, आलस और कामचोरी की भावना देश के स्वास्थ्य के लिए बिल्कुल ठीक नहीं है। यह गाँव के विकास में, देश के विकास में बहुत बड़ा बाधक है।

सरदार पटेल ग्रामीणों को समझाते हैं कि शराब और जुआ या किसी भी प्रकार की लत किसानों के लिए ही नहीं, बल्कि समग्र मनुष्य जाति के लिए घातक है। किसानों को इससे बिल्कुल दूर रहना चाहिए। बुरी लत या संगत सदैव आत्मघाती ही होती है।

सरदार पटेल चाहते थे कि आदर्श गाँव का हर किसान अपनी पत्नी का, स्त्री जाति का आदर करे। वे कहते हैं कि किसान जैसा बर्ताव गाय-भैंस के साथ करता है, उसे खरीदता-निकालता है; ठीक वैसा ही बर्ताव - व्यवहार किसान अपनी पत्नी से करता है। उनकी दृष्टि में वे किसान जो अपनी पत्नी पर विश्वास नहीं करते, उसमें मर्दानगी नहीं है।

यहाँ वे अंग्रेज गोरों का दृष्टांत देते हैं कि गोरे जहाँ जाते हैं वहाँ अपनी पत्नी को ससम्मान लेकर जाते हैं उनसे समान व्यवहार करते हैं, उन पर भरोसा करते हैं। किसान अपनी पत्नी पर इतनी वन्दिशें रखता है कि वह किसी सभा वगैरह में जाकर कुछ सीख भी नहीं सकती। वे स्त्री से समान व्यवहार, आदर और प्रेम करने की प्रेरणा देते हैं तभी घर का, गाँव का विकास संभव है। स्त्रियों के विकास से ही सशक्त परिवार, समाज और फिर सशक्त स्वराज की स्थापना, राष्ट्र का विकास संभव हो सकेगा।

सरदार वल्लभभाई पटेल किसानों को पुनः समझाते हुए कहते हैं जब तक गाँव में बैर-फूट रहेगी, लोग आपस में लड़ते रहेंगे, ईर्ष्या-द्वेष में जलते रहेंगे, तब तक गाँव का विकास संभव नहीं है। वे दृष्टांत देते हुए कहते हैं कि "इस शरीर में अनेक भिन्न-भिन्न अवयव हैं। परंतु वे कितनी एकता से अपना काम करते हैं? जिसने यह स्वरूप बनाया है, उसकी रचना की बलिहारी है। पैर में काँटा चुभते ही सिर तक उसका दर्द पहुँच जाता है। अवयव अलग-अलग बनाए हैं परंतु उनमें से एक के बिना भी शरीर का कारबार ठीक नहीं चलता। गाँव शरीर की तरह होना चाहिए। गाँव में एक भी दुखी हो, एक भी भूखा हो, तो सारे गाँव को वह दुख महसूस होना चाहिए। मगर किसान आज फूट में डूबा हुआ है, झूठे बड़प्पन में गर्क है। जिस गाँव में अनेकों को खाना न मिलता हो वहाँ बड़प्पन कैसा? जहाँ राजदरबार में हमारी इज्जत नहीं, वहाँ हमारा बड़प्पन में डूबना कैसा और आपस में लड़ना कैसा? किसान ईश्वर को भूल गया है। यही इसकी फूट का कारण है। व्यापारी लोगों में एक की स्थिति अच्छी होगी, तो वह जाति-भाइयों को ऊँचा चढ़ाएगा। मगर किसान ऊपर चढ़ने वाले भाइयों के पैर खींचेगा। ऐसी ईर्ष्या और फूट को निकाल डालिए।"[1]

सरदार पटेल मानते थे कि स्वराज ऊपर से नहीं टपकेगा, उसे किसानों को खुद लेना है। स्वराज की इमारत गाँव में ही खड़ी करनी है। अगर स्वराज अंग्रेजों से मिलना होता, तो पटेल को गाँव-देहात में जाकर किसानों को समझाने-बुझाने आना ही क्यों पड़ता। वे राजतंत्र में किसानों का महत्त्वपूर्ण स्थान चाहते थे, तभी उनका विकास संभव है। उस दौर में भारत देश में 80% से अधिक लोग खेती-किसानी करते थे। अंग्रेजी सरकार की सारी नीतियाँ किसान विरोधी रहीं, जमीदारों का जुल्म अपने स्थान पर यथावत बना रहा, बल्कि बद से बद्तर होता चला गया। सर्दी, गर्मी, बरसात सभी ऋतुओं की मार झेलते हुए वह किसान ही था जो देश की समग्र जनता समेत जमींदार, साहूकार और राज्य का पोषण रात-दिन अकेले परिश्रम करके करता है। संसार का पालन करने वाले किसान को जगत का अन्नदाता मानना चाहिए, राजतंत्र में उसका स्थान सर्वोपरि होना चाहिए। परंतु उसके साथ ऐसा कदापि नहीं होता। संसार की भूख मिटाने वाला किसान खुद एक वक्त की भरपेट रोटी के लिए तरसता है। संसार के अन्नदाता को बेचारा, गरीब, कंगाल, भिखारी, मूर्ख और न जाने क्या-क्या कह कर ठुकराया जाता है। उसकी गिनती मनुष्य की श्रेणी में होती ही नहीं है। उसकी व्यथा, उसकी पीड़ा, उसके फ़रियाद को सुनने वाला इस देश में कोई है ही नहीं। दरअसल इस देश की बदहाली का यही बहुत बड़ा कारण है जहाँ देश की सबसे बड़ी ताकत को सबसे उपेक्षित, नगण्य माना जाता है, उसके साथ अपमान जनक व्यवहार होता है। सरदार पटेल किसानों को स्वराज का सबसे मजबूत स्तंभ बनाना चाहते थे। किसानों में आत्मसम्मान, आत्मगौरव, आत्मनिष्ठा और आत्मस्वाभिमान की भावना भरना चाहते थे। वे मानते थे कि जब तक हमारे किसानों को आत्मस्वाभिमान का अहसास नहीं होगा, तब तक उन्हें राजतंत्र में उचित स्थान नहीं मिलेगा, तब तक उनके दुखों का अंत नहीं होगा। सरदार पटेल किसानों को उनकी ताकत, उनकी शक्ति का अहसास कराना चाहते हुए कहते हैं:- "आँखें होते हुए अंधा बनने वाले को कोई रास्ते नहीं लगा सकता; इसलिए किसानों को अपना कल्याण करना हो, तो उन्हें अपनी अनेक दुर्बलताओं के विरुद्ध जबरदस्त लड़ाई करनी पड़ेगी।"[2] उनके अनुसार किसानों को अपनी ताकत बढ़ानी पड़ेगी। तभी उन पर होने वाले जुल्म बंद होंगे। किसानों में स्वाभिमान की भावना जाग्रत हुए बिना उनका कभी कल्याण नहीं होगा, जितना कष्ट किसान सहता है, उतना कोई नहीं सहता है। उसकी सहनशक्ति मिट्टी में मिल जाती है और किसानों को दया, तिरस्कार, मजाक का पात्र बना दिया जाता है।

सरदार पटेल ने किसानों को संगठित होकर रहने पर जोर दिया है। उन्होंने दृष्टांत देते हुए अपने भाषण में कहा था कि- "सूत की बारीक तार जब अलग-अलग होते हैं तो इतने कमजोर होते हैं कि हवा के झोंके से भी टूट जाते हैं। परंतु जब अधिक संख्या में इकट्ठे होकर मुहब्बत करते हैं और ताने-बाने में बुने जाकर कपड़े का रुप लेते हैं, तब उनकी मजबूती, सुंदरता और उपयोगिता अद्भुत बन जाती है।"[3] किसान सूत के इन धागों की तरह प्रेम से, एकता और अखंडता की भावना से संगठित होंगे, तब उन्हें अपनी शक्ति का अहसास होगा। उन्हें आपस में झगड़े - झंझट करके मुकदमेबाजी करने में अपना समय और पैसा नहीं गँवाना चाहिए। साथ ही ग्राम प्रमुख मुखिया और सरपंच को ऐसा व्यवहार करना चाहिए कि गाँव वाले और किसान उन पर पूरा भरोसा करें। गाँव वाले उनकी बुद्धि और न्याय पर भरोसा करें। हजारों-हजार किसान अदालत के चक्कर काटते हुए अपना रुपया और समय दोनों बर्बाद करते हैं।

सरदार पटेल का यह कहना था कि किसानों को खेतीबाड़ी करने के साथ-साथ उससे बचे वक्त में कोई न कोई कुटीर उद्योग, गृह उद्योग जैसे सूत काटना, कपड़े बुनना, पशु पालन आदि अवश्य करना चाहिए, ताकि वे अपने जीवन की कमियों को पूरा कर सकें। किसानों को गैरजरूरी या किसी भी तरह के अनावश्यक खर्च से सदैव बचना चाहिए। उनको मृत्यु के बाद भोज देने का व्यर्थ खर्च कदापि नहीं करना चाहिए। उन्हें झूठा दिखावा, मिथ्याभिमान और अज्ञानता के कारण मनमाने कर्ज के बोझ तले नहीं दबना चाहिए, क्योंकि खर्च करने वाला ऋणभार से दबकर अपने और अपने परिवार का सदैव बुरा करता है। अतः परिवार के जीवित सदस्यों की चिंता करनी चाहिए। मृतक का शोक अवश्य मनाना चाहिए लेकिन कर्ज लेकर, भोज देकर दिखावा करना सबसे बड़ी मूर्खता है।

सरदार पटेल किसानों को समझाते थे कि उनको अपनी संतानों की शादी कम उम्र में नहीं करनी चाहिए। बच्चों का बाल विवाह करना उनकी हत्या करने के समान है। इसके कारण किसानों के बच्चे दिन-प्रतिदिन कमजोर होते जा रहे हैं। इससे दुनिया में हमारे देश की बदनामी होती है। यह स्वराज के हित में नहीं है। इसके अतिरिक्त सरदार पटेल, गाँव से छुआछूत के भेदभाव को जड़ से मिटाना चाहते थे। गाँव के सबसे बड़े वर्ग के अनेक ऐसे कार्य हैं जो निम्न वर्ग के लोगों के बिना कदापि संभव नहीं है, ऐसे में छुत-अछूत की भावना को क्यों पालें। इससे राष्ट्र में धर्मांतरण को भी खूब बढ़ावा मिलता है, गाँव का संगठन कमजोर होता है। तमाम भेदभाव रखने वालों को स्वराज कभी नहीं मिल सकेगा। अतः स्वराज की खातिर जाति-पाति, अमीरी-गरीबी, बड़े-छोटे के तमाम भेदभाव को जड़ से मिटाकर कौमी एकता, कौमी भाईचारा को बढ़ावा देना होगा। सरदार पटेल मानते थे कि किसानों में हिंदू-मुसलमान या जाति-पांति का भेदभाव नहीं हो सकता क्योंकि जमीन जोतकर मेहनत से धन पैदा करने वाले अनेक छोटे जमींदार, किसान या खेती के काम में मदद करने वाले सभी मजदूर किसी भी जाति या धर्म के क्यों न हों, वे सब सिर्फ और सिर्फ किसान हैं, उन सभी की तमाम परिस्थितियाँ, समस्याएँ एक समान हैं, अतः उन्हें आपस में सदैव एकजुटता रखनी चाहिए।

सरदार पटेल चाहते थे कि प्रत्येक किसान के बच्चे को दूध मिले, स्कूल में अच्छी शिक्षा मिले, वे कुपोषित न हों, बच्चों को उद्योग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, उन्हें रचनात्मक बनाना चाहिए। शारीरिक-मानसिक शिक्षा, उत्तम स्वास्थ्य, खान-पान, रहन-सहन से लेकर संपूर्ण गाँव की स्वच्छता की शिक्षा देनी चाहिए क्योंकि इससे किसानों के बच्चे सुरक्षित, बलिष्ठ और शिक्षित होंगे। किसान के बेटों के समान ही बेटियों की भी शिक्षा-दीक्षा और परवरिश होगी तभी स्वराज सशक्त होगा। गाँव को किसी भी कीमत पर संभालना ही होगा, तभी स्वराज की जड़ को मजबूत किया जा सकता है।

निष्कर्षत : इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल किसी भी परिस्थिति में किसानों को सर्वोपरि स्थान देते थे। उनकी गहरी, तर्कसम्मत चिंता करते थे। उनकी दृष्टि पूर्णतः वैज्ञानिक थी। 'सरदार पटेल के भाषण' ग्रंथ में किसानों को संबोधित किए गए भाषणों का अध्ययन करने के उपरांत यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं है कि सरदार वल्लभभाई पटेल किसानों के मसीहा थे, गाँव की रक्षार्थ सदैव तत्पर रहने वाले एक महान कर्तव्यनिष्ठ

कर्मयोगी थे। उनका मानना था कि जिस प्रकार पेड़ की जड़ में जल डालो, तो पूरा पेड़ हरा-भरा, पल्लवित-पुष्पित एवं विकसित होता है, उसकी जड़ मजबूत होती है, पेड़ दीर्घायु होता है, ठीक उसी प्रकार भारत के तत्कालीन समय में अस्सी प्रतिशत से अधिक गाँवों में रहने वाले किसानों के जीवन को जब सुखमय बनाएँगे, किसान खुशहाल होगा, भारत का प्रत्येक गाँव आदर्श गाँव बन जाएगा, तब जाकर भारत के स्वराज की नींव और अधिक सशक्त, मजबूत होगी और एक आदर्श स्वराज का निर्माण होगा। भारत देश को सशक्त बनाने, एकता-अखंडता सुनिश्चित करने के लिए परम आवश्यक है कि गाँव की तमाम विकृतियाँ, विसंगतियाँ, कुप्रथाओं, भेदभाव, अंधविश्वास, आपसी रंजिशों को समाप्त किया जाए, गाँव का प्रत्येक किसान आत्मस्वावलंबी, आत्मविश्वासी, आत्मस्वाभिमानी एवं संगठित बने। गाँव का प्रत्येक किसान उत्तम स्वास्थ्य, शिक्षा, खाद्यान्न, स्वच्छता, बेरोजगारी आदि बुनियादी समस्याओं को मिटाने में अपना अक्षुण्ण योगदान दे। बदलते समय के साथ किसान को भी अपने सोच विचार, सामर्थ्य और योग्यता में परिवर्तन लाना आवश्यक है तभी जाकर हमें सच्चा स्वराज मिल सकेगा।

सरदार वल्लभभाई पटेल के विचारधारा से स्पष्ट है कि वे बहुत स्थिर, गंभीर विचारक थे, उनके पास सुदृढ़ जीवन दृष्टि थी, वे युगद्रष्टा, भविष्यद्रष्टा थे। वे समस्याओं के अस्थायी समाधान के बजाय उसका स्थायी निराकरण चाहते थे। वे कृत्रिमता के स्थान पर प्राकृतिक जीवन शैली को अधिक महत्त्व देते थे, हरे-भरे देश में जैविक खेती पर विशेष बल देते थे, जिसकी महत्ता को आज पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है और जैविक उत्पादनों की माँग खूब बढ़ती ही जा रही है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। अतः देश के कृषकों की स्थिति जब तक नहीं सुधरेगी, भारत देश के गाँवों में नैसर्गिक परिवेश, उत्कृष्ट पर्यावरण का निर्माण नहीं होगा, गाँव के प्रति लोगों का मानसिक पर्यावरण स्वच्छ नहीं होगा, तब तक इस देश को सच्चा स्वराज कदापि नहीं मिल सकता है। सरदार पटेल द्वारा कही गयी ये बातें जितनी प्रासंगिक उस दौर में थीं, उससे कहीं ज्यादा प्रासंगिक वर्तमान समय में हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सरदार पटेल के भाषण, संपादन नरहरिद्वारका दास पारीख, उत्तम चंद दीपचंद शाह, नवजीवन प्रकाश मंदिर, अहमदाबाद-पृष्ठ-167
2. सरदार पटेल के भाषण, संपादन नरहरिद्वारका दास पारीख, उत्तम चंद दीपचंद शाह, नवजीवन प्रकाश मंदिर, अहमदाबाद-पृष्ठ-312
3. सरदार पटेल के भाषण, संपादन नरहरिद्वारका दास पारीख, उत्तम चंद दीपचंद शाह, नवजीवन प्रकाश मंदिर, अहमदाबाद-पृष्ठ 312- 313

•